

॥ दान ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ त्रैलोक्यका अधिपति श्रीविष्णुकननमस्कारगरीकन
नानाशास्त्राधिकारको राजनीतिमकरंदु ॥ १ ॥ त्रैलोक्यसंप्रदायद्विधर्मर

श्री

॥ अजयति ॥ ॥ प्रणम्य शिरसा विष्णुं त्रैलोक्याधिपतिं
प्रभुं नानाशास्त्रोद्धतं वक्ष्ये राजनीतिसमुच्चयं ॥ १ ॥ अधीत्यैवमि
दं शास्त्रं नरो ज्ञायति तत्तत् ॥ धर्मो यदेकविमलं कार्यं कार्यं शुभाशुभं

ना

अधर्मं कार्यं रजकार्यं शुभं शुभं ज्ञानं अज्ञानं जान्याहो ला ॥ २ ॥

॥ राम ॥

वज्रलायासितः सूर्यसितः मरुदानगर्भासितः सतिसितः स्वास्त्रिसितः राजकु
लसितः सतिसितविश्वासगर्भानासिद्ध ॥ ७ ॥ वैरिसितः विश्वासगर्भ

उन्मत्तानां भुजंगानां मयपानां च दंतितानां ॥ स्त्रीणां राजकुलानां
च विश्वासंतिगता युव ॥ ७ ॥ वैरिणा सह विश्वासं योनरः
कर्तुमिच्छति ॥ सर्वसायेषु संसृज्यतः प्रतिबुध्यते ॥ ८ ॥

जोइ ह्यगर्भं त्यो मनुष्य रुषकाहु प्यामाचही सुत्याको वस्था पांत जलो
गरी विडं जंछ तस्मै पछि पाहा पांडु ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ चान ॥

॥ ३ ॥

धनकमाउंदा धानप्रयोगगर्द विद्यायहदा केहीवस्तुसंग्रहगर्द खोंदा लिंदा
दिंदा ॥ हतिथोकनालज्जानमानु ॥ ६ ॥ गुरुवरोवर आमापनि वावा

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यासंग्रहलोषु च ॥ आहारव्यवहारेषु
त्यक्तलज्जः सदा भवेत् ॥ ६ ॥ नगुरोः सदृशीमाता नगुरोः
सदृशः पिता ॥ यस्मादयतिसंघोरं संसारोदविहस्ररम् ॥ १० ॥ ॐ

पनि छैन जो गुरु ले संसार समुद्र नतरीश कु तारिदिं छन ॥ १० ॥ ॐ

॥ रामः ॥

॥ ३ ॥

आमागंगा ॥ वावापुष्करतीर्थं गुरुकेदारतीर्थं वरोवरकुन ॥ माताभत्यागंगा
वरोवरमानु ॥ ११ ॥ कुरुपीकोरूपं विद्याकुन ॥ तपस्वीकोरूपक्षमाकुन ॥ कोइ

मातागंगासमंतीर्थं पितापुष्करमेव च ॥ गुरुः केदारतीर्थं च माता
गंगासमापुनः ॥ ११ ॥ विद्यारूपं कुरुयातां क्षमारूपं त
पस्विनां ॥ कोकिलानां स्वरं रूपं नारीरूपं पतिवृता ॥ १२ ॥ ॐ

लीकोरूपस्वरहो स्त्रीकोरूपपतिवृताहो ॥ १२ ॥ ॐ १२ ॥ १२ ॥

॥ चान ॥

॥ ४ ॥

विद्यावरोवरभाईकोहीछैन. आक्राशरीरमा. उत्पन्नभयाकोरोगवरोवरशत्रुको
हीछैन. ॥ छोरावरोवरपियारोकोहीछैन. देनदेविबलियोहीछैन ॥ १३ ॥

नचविद्यासमोबंधः नचव्याधिसमोरिउः ॥ नचापत्नेसमस्नेहो

नचदेवात्परंवलं ॥ १३ ॥ विद्याप्रवातिनोमित्रं भाष्यमित्रं गृहेषु

च ॥ आनुरस्यौषधंमित्रं धर्ममित्रं परत्रच ॥ १४ ॥ १४ ॥ ६६३

विदेशमाविद्यामित्रं जंछ. घरमास्वास्त्रिमित्रं जंछ. रोगीको औषधमित्रं जं
छ परत्रकोमित्रधर्मजंछ ॥ १४ ॥

॥ रामः ॥

॥ ४ ॥

जन्माउन्या १ व्रतबंधविवाहादिगरीदिन्या २ ॥ विद्यापज्ञाउन्या ३ ॥ अन्नदिन्या ४ अ
यदिन्या. भयदेवीरक्षामर्फी ५ इषांचपितामकाकुन् ॥ १६ ॥ गुरुपत्नी. गु

जनेताचोपनेताचयलुविद्यां प्रयच्छति ॥ अन्नदाताभयेत्रातापं

चेतेपितरः स्मृताः ॥ १६ ॥ गुरुपत्नी राजपत्नी मित्रपत्नी तथे

॥ वच ॥ पत्नीमातास्वमाताचपंचेतामातरः स्मृताः ॥ २० ॥ ६००

रुकीभार्या १. राजाकीपत्नी २ मित्रकीपत्नीमित्यानी ३ ॥ आक्रीस्त्रीकीमाताप
ईषाचमाताभन्याकाकुन् ॥ २० ॥ ॥ ॥ २० ॥ ॥

॥ चान ॥

॥ ६ ॥

पांचवर्षसंमलालनागर्नु ताडनागर्नु वाहाउपांत दशवर्षसंमशासना ता
डनागर्नु सोहवर्षभयापहि पुत्रकनीमित्रवरोवर व्यवहारगर्नु ॥ २१ ॥ ला

लालयेत्पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत् ॥ संपार्श्वोऽश्वो व
र्षे पुत्रं मित्रवदचरेत् ॥ २१ ॥ लालनाहवो दोषा ताडनाह
वोगुराः ॥ तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्न तु लालयेत् ॥ २२ ॥

लनागयाको वडो दोष छ ॥ ताडनागयाको वडो गुरा छ ॥ तस्कारण पुत्र शिष्य ॥ शमः ॥
ताडने गर्नु लालनागर्नु ॥ २२ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ २२ ॥ ॥ ६ ॥

विद्यापहनुमनपनिह अभासपनिगर्नुत उदितभयापनिजांन्याजं छ ॥ जस्का
पहनुमनपनिहैन अभासपनि गर्देनत उदिलेकाजं छ ॥ २३ ॥ जान्या

ह्याभासौयदिस्यातां प्रज्ञया किं प्रयोजनं ॥ ताबुभौयनिनस्या
तां प्रज्ञया किं प्रयोजनम् ॥ २३ ॥ पुत्रास्तु विविधैः शास्त्रेभिर्योग्या
सततं बुधैः ॥ नीतिज्ञा उदितं यं न्याः भवंति खलु पूजिताः ॥ २४ ॥

मनुष्यलेखो राह रुलाई अनेक शास्त्रमाला उनु नीति जान्या उदिवंत भया
सर्वे लोक ले पूजा गर्हु ॥ २४ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ वान ॥
॥ ७ ॥

हे पुत्रः अलसीनगर यह नय ह्या भारी बोक न्या होला पद्माराजा लेय नि पूजा
गर्ह न तस् अर्थ दिन दिन यह ॥ २५ ॥ अरु भंगार गरी प्रयोजन छैन का

पठ पुत्र कि मातस्य म पठो भारवाहकः ॥ पठ न सं पू ज्यते राजा य
ठ पुत्र दिने दिने ॥ २५ ॥ गुरो सु क्रियतां यत्न कि म नोऽन्यत्
योजनं ॥ विक्रियं तेन घंठा भिर्गा वंक्षीर विवर्जिताः ॥ २६ ॥

न भन्या दूद न भया कागाई कागला माहो घंठ बांध्या ले के ही मोल पाउ दैन तत्तै

ॐ
रामः ॥
॥ ७ ॥

मनुष्य को गहना भन्या रूप हो रूप को पनि गहना गुरा हो गुरा को गहना ज्ञान
हो ज्ञान को पनि गहना क्षमा सहनु ॥ २७ ॥ मनुष्य ले गुरा सो धनु रूप न सो

नरस्या भरणां रूपं रूपस्या भरणां गुराम् ॥ गुरास्या भरणां ज्ञानं
ज्ञानस्या भरणां क्षमा ॥ २७ ॥ गुरां पछ सि मारूपं शीलं पछ स्व
मा कुलं ॥ सिद्धि पछ स्व मा विद्या भोगं पछ स्व मा धनम् ॥ २८ ॥ ॐ

धनु शील शोधनु कुल न शोधनु सिद्धि सो धनु विद्या मा नैन सुध्या उ भो
ग गर्ह की गर्दन भानि सो धनु धन न सुध्या उ ॥ २८ ॥ १ ॥

॥ वान ॥
॥ ८ ॥

गुरानभयारूपव्यर्थद्वशीलनभया कुलव्यर्थद्व॥ सिद्धिनभयाविद्याव्यर्थ
द्व॥ भोगनगव्याधनव्यर्थद्व॥ २९ ॥ रूपकोशोभागुरालेज्जुं कुलकोशोभा

अगुरास्यहतरूपं अशीलस्यहतरं कुलं॥ असिद्धेश्वहताविद्या
अभोगस्यहतंधनं॥ २९ ॥ गुरांभूषायतेरूपंशीलंभूषायते
कुलं॥ सिद्धिंभूषायतेविद्याभोगंभूषायतेधनम्॥ ३० ॥

शीललेज्जुं विद्याकोशोभासिद्धिलेज्जुं धनकोशोभाभोगलेज्जुं॥ ३० ॥

॥ रामः ॥
॥ ८ ॥

वेसकुलमाहोदोरीदिनु विद्याकोअभ्यासमाहोरा लाई लाउनु व्यसन
कोअभ्यासमा शत्रुलाई लाईदिनु मित्रलाई धर्ममा लाईदिनु॥ ३१ ॥

सुकलेयोजयेत्कन्यां पुत्रं विद्यासुयोजयेत्॥ व्यसनेयोजयेच्छ
त्रुं मित्रं धर्मेनियोजयेत्॥ ३१ ॥ नासुचं शिखरो मेरुर्नातिनि
मोरसातलं॥ व्यवसायसहायानां नातिपारोमहीदधिः॥ ३२ ॥

उद्योगगर्भा लाई सुमेरुपनिवृत्त उच्चो छैन उद्योगगरी रहन्या लाई रसातल
पातालपनिगहिरो छैन लकोहोरोलाग्यासमुद्रपनिनतरिशकनु छैन॥ ३२ ॥

॥ चान ॥
॥ ५ ॥

एक श्लोक लेभयापनि आधा श्लोक लेभयापनि एक पाउ लेभयापनि एक अक्षर भनिकन पनि दान गरी कन पही कन पनि एतिले दिन विताउनु खातीन

श्लोकेन चतुर्दशेन पादेनैकाक्षरेण च ॥ अदं ध्यादि वसं कुर्याद्वा
नाध्ययन कर्मभिः ॥ ३३ ॥ योजनानां सहस्राणि ब्रह्मयातिपि
पीलिका ॥ अगच्छन् वै न ते योपि पदमेकं न गच्छति ॥ ३४ ॥

रहनु ॥ ३३ ॥ कमिला हरु हज्जार कोश भयापनि एको होरो हिंडै रह्या पग्छ
आद्या समानि नहि द्यादै विगहउ पनि एक पाइ लो पनि जांदैन ॥ ३४ ॥

॥ रामः ॥
॥ ५ ॥

धन कमाउंदा विद्या पढ्दा पर्वत मा चहुदा धर्म गर्दमा स्त्री सित रस भाव को
काम गर्दमा ॥ केही परिश्रम गर्दा ॥ सुख सुख गर्नु हत पत न गर्नु ॥ ३५ ॥

शनै रया शनै र्विद्या शनैः पर्वत लंघने ॥ शनैः धर्म भव काम भव
याम भव शनैः शनैः ॥ ३५ ॥ गुरु भुक्त्वा विद्या उक्तेन धने
नवा ॥ अथ वा विद्या विद्या चतुर्थो नोपलभ्यते ॥ ३६ ॥

गुरु को सुसार गरी विद्या पाजिन्छ ठेर धन भया पंडित पा ल्या अथवा ॥ एक
थोक विद्या दी अर्को विद्या पाजिन्छ चौथो उपाय विना विद्या पाउ न्छैन ॥ ३६ ॥

॥ चान ॥

॥ १० ॥

एकै अक्षर पहाउ न्यालाई पनि जो गुरु भनि माँदै न ते सले शय योनि ऊऊ
को जन्म भै ॥ चाँडाले भै जन्म छ ॥ ३७ ॥ गुरु छेउ पाठन ली आफै पुस्तक हे

एकाक्षर पुस्तक तारं यो गुरुं नाभि मन्यते ॥ श्वान योनि शतं गत्वा
चाँडाले खपि जायते ॥ ३७ ॥ पुस्तक प्रत्यया धीतं ना धीतं गुरु
संनिधौ ॥ न शोभते सभामध्ये जाल गर्भ इव स्त्रियः ॥ ३८ ॥

री जो पछुछ त्यो सभामध्ये जाल को गर्भ बाट भया को बाल खर्जै सुहाउँदै न
तसर्थ गुरु मुख बाट सुनु पर्छ ॥ ३८ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३८ ॥

॥ रामः ॥

॥ १० ॥

सिपाल मानी सकोसी पसुशील भै रहनु अलसी न माँनु पंडित ऊनु मित्र को
संग रहनु रति गुरा जो छुन कैले पनि साकिँदै न चोरले पनि चोर्न सक्दै न ॥ ३९ ॥

शिल्पि शील मना लस्यं पांडित्यं मित्र संग्रहं ॥ अचोर हरणी विद्या
पंच ते चाक्षयोनयः ॥ ३९ ॥ नहि जन्म निजे सुत्वं ज्येष्ठत्वं गुरा
मुच्यते ॥ गुरात् गुरात् रं याति पयो दधि घृतं यथा ॥ ४० ॥

जन्मले जे ठो ऊँदै न गुराले जे ठो ऊँछ जस्तो दूध मंदा दहि मंदा घिउ श्रेष्ठ ऊँछ
तस्तै जनपद्धि को श्रेष्ठ ऊँछ ॥ ४० ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४० ॥

॥ चान ॥

॥ ११ ॥

हुलोकललेक्याहुंछु जस्को गुराछु उसैको पूजाहुंछु ॥ शुद्धवंशदेविभयाकोध
नुछतपनि तांडोडोरीनभयाकालेक्याहुंछु ॥ ४१ ॥ वडाकुलमाजन्मापनि ॥

किंकलेन विशालेन गुरावान् पूज्यते नरः ॥ धनुर्वंशविभुहोपि
निर्गुराः किंकरिष्यति ॥ ४१ ॥ किंकलेन विशालेन विद्याहीन
सुयो नरः ॥ अकलीनोपि विद्यास्तु देवतैरपि पूज्यते ॥ ४२ ॥ ॐ ॥

विद्यानभयाशोभाहैन कुलमाफि केछतपनि पंडितभया देवतालेपनि पूजा

॥ ४२ ॥

॥ रामः ॥
॥ ११ ॥

ताहासंमपारिगयाकोछैन ताहासंमडुंगाषोजछन् ॥ पारितरी ओहूँपछि
डुंगाकोक्याकामछु ॥ ४३ ॥ गुराभया सवैले पूजागर्छन् बाबुको नाउं चा

नावार्थी भजते नावं यावत्पारं न गच्छति ॥ उत्तीर्णं च गते पारे नौ
कायाः किंप्रयोजनं ॥ ४३ ॥ गुराः सर्वत्र पूज्यंते पितृवंशो निर
र्थकः ॥ वासुदेवं नमस्यंति वसुदेवं नते जनाः ॥ ४४ ॥ ॐ ॥

हिंदैन वसुदेवको छोराको सवैले पूजागर्छन् वसुदेवलाईकोही पूजदैन ॥

॥ ४४ ॥

॥ चान ॥
॥ १२ ॥

गुराजो हृतादाभयापनि नजिकेतु त्याउं छ जसै केतकी कागंध भमरा खोजी
जां छ नृतसै ॥ ४५ ॥ विद्यावंत कनुर राजा जनु बरो वर छैन राजा आकादे

गुराणाः कुर्वन्त्यदूरत्वं दूरेपि वसतां सतां ॥ केतकी गंधमाघायस्व
यंग छंतिषट्पदा ॥ ४५ ॥ विदत्वं च नृपत्वं च न हितुस्त्परा क
मौ ॥ स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ ४६ ॥

शमाहु लो छ पंडित जो सर्वत्रै गयापनि पूजा गर्छन ॥ ४६ ॥

॥ रामः ॥
॥ १२ ॥

सकै पुत्र भयापनि सपूत भया कुलकन विद्यावंत साधु ले प्रकाश गर्छन
लोचं दमाले सबै ठाउं उज्यालोग राउं छ तसै ॥ ४७ ॥ कोही मनुष्य वि

सके नापि सुपुत्रेण विद्यायुक्ते न साधुना ॥ कुलं पुरुषसिंहेन
चंडे सौव प्रकाश्यते ॥ ४७ ॥ विद्याया भाजनं कश्चित् कश्चित्
दयस्य भाजनं ॥ उभयो भाजनं कश्चित् कश्चित् नो भय भाजनं ॥

शाकापात्र छन कोही दयकापात्र छन कति लाई विद्यापनि धनपनि कुं
छ कति लाई विद्यापनि धनपनि छैन ॥ ४८ ॥

॥ चान ॥

॥ १३ ॥

फलद्वन्पादसजोद्धनमृद्धं नृगणवंतमनुष्यपतिनमृद्धं नृसुखाकोका
ठरसूर्यमनुष्यभाविन्याद्धनमृद्धं नृन ॥ ४६ ॥ चारथोकसंध्याकालमानगर्नु

नमंतिफलिनोहक्षनमंतिगुणितोजनाः ॥ शुक्काष्टं चमूरं चभि
द्यतेनैवमन्यते ॥ ४६ ॥ नहिकर्माणि चत्वारिसंध्याकाले प्रयोज
येत् ॥ आहारं मैथुनं निजा तथा स्वाध्यायमेव च ॥ ५० ॥ ॐ

खानु १ मैथुन २ निजा ३ ॥ पहनु ४ एति नगर्नु ॥ ५० ॥ ॐ ॥ ५० ॥

॥ रामः ॥

॥ १३ ॥

संध्याकालमाहारगम्यारोगलाग्ध मैथुनगम्यावकुतरिसाहा ॥ कूरगर्भं
छन् ॥ शयनगम्यादरिडीकुंछम् ॥ पश्चादेषि आयूष्यताडंछ ॥ ५१ ॥ वे

आहाराज्जायते व्याधिगर्भात् कूरश्च जायते ॥ अलक्ष्मी कश्च
शय्यायां सपाठादायुषक्षयः ॥ ५१ ॥ वेदवेदांगतत्त्वज्ञो जयहोम
परायणः ॥ आशीर्वादयरो नित्यमेष राजपुरोहितः ॥ ५२ ॥ ॐ

यवेदकाष्ठे षो अंगजां त्याजयहोमगर्दै रहत्या तत्पर आशीर्वाददिदै रहत्या
सत्ताराजाकोपुरोहितवाहिंछ ॥ ५२ ॥ ॥ ५२ ॥ ॐ ॥

॥ वान ॥

॥ १४ ॥

उद्विग्नसुंदर कसैको कूरमासनगर्न्या दुःखसुखवरोवरमान्या गरीपमाधि
पंडितमाधिदानगर्न्या सुस्तालाई राजाभंनु ॥ ५३ ॥ कुलीनशीलले युक्तम

प्राज्ञः स्निग्धो महीपाल छिद्रकर्मविवर्जितः ॥ विबुधेषु परित्या

गी समो दुःखे समः सुखे ॥ ५३ ॥ कुलशीलगुरोपेतः सत्यधर्म

परायणः ॥ प्रवीणः प्रेशलोदक्षो राजा ध्वक्षो विधीयते ॥ ५४ ॥

याको गुरावंत सत्यधर्ममातपरकुन्या सभवातमा जान्या ॥ सुंदर ॥ वहु
तचतुर सुस्तालाई राजा कानजि कीनु ल्याउनु भन्छन् ॥ ५४ ॥

॥ रामः ॥

॥ १४ ॥

वहुतै को धमया को घटिया व्यसनगर्न्या वहुतै लोभी वाजवी बोलन नशक
न्या वहुतै वांगै कामगर्न्या आमदानी भंदा खर्च अर्घ्या लोगर्न्या इ सुखी

कूरं व्यसनिलुब्धं अप्रगल्भमनार्जवं ॥ अनाय व्ययकर्तारं

नाधियत्येनियोजयेत् ॥ ५५ ॥ मूलवृत्तिहितो धीरः सर्वरत्न

परिक्षकः ॥ भुवि श्लाघ्यवसायी च धर्माध्यक्षो विधीयते ॥ ५६ ॥

यातनु ल्याउनु ॥ ५५ ॥ आफुरु पहिले को काममा तत्पर कुन्या धैर्यगरी कामग
र्न्या सत्तरत्नको परीक्षा गर्न्या पवित्रगरी रहन्या उद्यमगर्दै रहन्या सुस्तालाई धर्म

विकारी ल्याउनु ॥ ५६ ॥

॥ वान ॥

॥ १५ ॥

वैद्यशास्त्रमात्राभ्यासगर्न्यासवैद्योक्तजांन्यादेष्टैः पुसिलाग्यो वडोशीलभया
को. रस्तालाई वैद्यनुल्याउनु ॥ ५७ ॥ वावावरान्मुदेविजांन्याशास्त्रपनिजां

आयुर्वेदकृताभ्यासः सर्वज्ञः प्रियदर्शनः ॥ आर्यः शीलगुरोये
न. रसवैद्यो विधीयते ॥ ५७ ॥ पितुः पितामहादक्षः शास्त्रज्ञो मि
ष्टपाचकः ॥ मुचिभ्याकठिनश्चैव सपकारः प्रशस्यते ॥ ५८ ॥

न्या. ॥ मिठोगरी पकाउन जांन्या पवित्र सुघर कोमल अंग कन्या. रस्ताः
लाई ॥ रसोई गर्न्यानुल्याउनु ॥ ५८ ॥

॥ रामः ॥

॥ १५ ॥

एकवैद्युरसुन्या कोसमुरुन्या नौडो सुदगरी लेखन्या. सभलिपिजा न्या. सभ
शास्त्रहेन्या को रस्तालाई लेखक भन्नु ॥ ५९ ॥ कार्यको अनसर जा न्या.

सकडुक्तगृहीतार्थो जगुहस्तो जताक्षरः ॥ सर्वशास्त्रसंमालोकी.
एकलेखक उच्यते ॥ ५९ ॥ इंगिताकारतत्त्वज्ञो बलवान् प्रियदर्श
नः ॥ उग्रमादी सदादक्षः प्रतीहारः उच्यते ॥ ६० ॥

बलवंत. लोकासतमिलन्या. कोमलविभक्षरा रस्ता कन छतिदार गर्नु.

॥ ६० ॥

॥ ६० ॥

॥ ६० ॥

॥ ६० ॥

॥ ६० ॥

॥ चान ॥
॥ १६ ॥

हर्ती कर्ता समस्तशास्त्रज्ञान्याविचक्षरापरिश्रमनगर्भ्यः शूरोऽस्त्राकनसेना
पतिगर्भु ॥ ६१ ॥ समस्तघोडाकोशास्त्रज्ञान्याः घोडाकोषवहारसिकाउन

समस्तकृतशास्त्रज्ञः पंडितश्च जितश्रमः ॥ धैर्यशौर्यगुरोपेतः
सेनाध्यक्षो विधीयते ॥ ६१ ॥ समस्तहयशास्त्रज्ञो वाहनेषु प
राजितः ॥ शौर्यधैर्यगुरोपेतश्चाध्यक्षो विधीयते ॥ ६२ ॥

ज्ञान्याः शूरः वीरः गुरावन्तः ॥ अस्त्राकनः सुदारगर्भु ॥ ६२ ॥ ॐ ॥

॥ रामः ॥
॥ १६ ॥

मूर्खत्वाद्दकामलाया पद्धिः तीव्रकुराडुं दुःअपजशा धनकोनाशः नरकमा
निश्चयपद ॥ ६४ ॥ तस्कारराजाले धर्मकामधनवटाउन्पानि

मूर्खेनियोज्यमाने तु त्रयोदोषा महीयते ॥ अयशश्चार्थनाशश्च
नरकेपतनं क्व ॥ ६४ ॥ तस्मात्तु भूमीश्वरो नित्यं धर्मकामा
र्थसिद्धये ॥ गुरावन्तं नियोज्येत गुराहीनं विवर्जयेत् ॥ ६५ ॥

मित्रे गुराज्ञान्यामानि सुत्वाद्दकामलाउनु गुरानभया कालाद्दवर्जितगर्भु ॥ ६५ ॥

॥ वान ॥

॥ १८ ॥

भृत्यभंनुचाकरले यत्किंचित्पायगरोसपनिगुरावंतकनकामलायापद्धिने
सैलेराजालाईपायपुण्यगयापनिलक्ष्मीकोहृदिगरिदिंदुन ॥ ७० ॥ जसोगरी

यत्किंचित्कुरुतेभृत्य शुभंवायदिवाशुभं ॥ तेनसंवर्धतेराजा
सुकृतैर्दुकृतैरपि ॥ ७० ॥ यथाहेमवरीक्षेततापताडनदेह
ने ॥ तथापुरुषमप्येवं कुलशीलेनकर्मणा ॥ ७१ ॥

सुनकोपरीक्षा पोली हानी काटीहेछ तसैगरी मनुष्यलाईपनि कुलले
शीलले कर्मले परीक्षागर्नु थाहापानीछ ॥ ७१ ॥

॥ राम ॥

॥ १८ ॥

केही कामलाईपठार्कन चाकरकोपरीक्षागरिजानु ॥ आफूलाईडुखपन्यामा
वाज्जुभाईचिहिंदु ॥ जगतिपदामामित्रकाथाहाऊछ स्त्रीकोविचारधनसकी

ज्ञानव्याःप्रेक्षागोभगा वांधवाव्यसनागमे ॥ आपत्कालेतथामि
त्रेभाय्यीचिभवक्षये ॥ ७२ ॥ भृत्यावहुविधाज्ञेया उत्तमाधम
मध्यमा ॥ तानिज्ञेयानिप्राप्त्येवविधेयेवकर्मसु ॥ ७३ ॥

यापद्धिजनि ॥ ७२ ॥ काकरात्याका ठेरैकारकाऊछ उत्तम ॥ ताका
घटिग ॥ निजस्तालाई सैकामविचारगरीलाउनु ॥ ७३ ॥ ७३ ॥

चान ॥
॥ ५६ ॥

बहुत अलसी छिचरो कोधी लोभी अहाया को न मान्या बसनी धर्त असंतोषी सेवा
नगर्त्या सत्ता लाई चाकर नराषनु ॥ ७४ ॥ अतिरिसाहा अति रूपणी सत्ता

आलस्यं मुखरं कूरं तद्धं व्यसनिनं शठं ॥ असंतुष्टमभक्तं च त्व
जेभ्यः नराधिपः ॥ ७४ ॥ त्वजे स्वाभि नमस्तु प्रमत्तु ग्रं रूपरां त्व
जेत् ॥ रूपरा दविशेषज्ञः सत्ता च कृतनाशनं ॥ ७५ ॥ ॥

स्वामिकन छोडनु ॥ रूपणी भंदापनि गुन्याकोर नगन्याको थाहान पाडन्या ॥ रसः ॥
तपसै भंदापनि गन्याको निहित नूमा घोला उन्या लाई छोडिहा लनु ॥ ७५ ॥ ॥ १६ ॥

अहायाको करो छोडी अर्के थोक गन्या स्वास्ति मूर्ख छोरा कुरा को विचार नगर्त्या चा
कर ॥ श्री तिनभयाको दाजु भाई ॥ सति थोक लाई छोद्या वडो मुख जुंछ ॥ ७६ ॥

वामा भार्या सुतो मूर्ख प्रेस को वाग्विचारकः ॥ निस्त्रे हो वं धुवर्ग भ्यत्य
मेदस्य महत्सुखं ॥ ७६ ॥ न कश्चित्कस्यचिन्मित्रः न कश्चित्क
स्यचित्रप्रियः ॥ कारणा देव जायंते मित्रा शिरिष वसथा ॥ ७७ ॥

कसै को काही मित्रपनि छैन कसै को पियारो पनि छैन कारसो ले मित्र जुंछ ॥ का
रसो लेश जुंछन् ॥ ७७ ॥

॥ चान ॥ भा क्रामकानिमित्तसेवागर्ह परमार्थकानिमित्त कोहिगर्देनन् वाछोपनि दूद
॥ २० ॥ सकीयापछि ॥ आक्रा आमा लाई छोडछु ॥ ७८ ॥ जुवारी व्यसनगर्त्या लाई नि

कार्प्यार्थी भजते लोको न लोकः परमार्थिकः ॥ यत्सः क्षीरक्षयं च
व्यापरित्यजति मातरं ॥ ७८ ॥ कृतो व्यसनि नो निद्रा अतः स
स्य कृतो रतिः ॥ कृतः सौख्यं हरिदस्य दुर्जनस्य कृतः क्षमा ॥ ७९ ॥

डाऊं दैन असंतोषी लाई पीति ऊं दैन दारिद्र लाई सुख ऊं दैन दुर्जन लाई क्षमा ॥ रामः ॥
ऊं दैन ॥ ७९ ॥ ॥ २० ॥

चोरको मान ऊं दैन दुर्जनको क्षमा ऊं दैन ॥ वेश्याको पीति ऊं दैन धिनारको सत्य
ऊं दैन ॥ ८० ॥ निर्वलीयाको वलराजा हो वालखको रूणी बल हो मूर्खको नवी

नस्करस्य कृतो मान्यं दुर्जनस्य कृतः क्षमा ॥ वेश्या स्त्रीणां कृतः स्नेहः कृतः
सत्यं च कामिनाम् ॥ ८० ॥ दुर्बलस्य बलं राजा बालानां रोदनं
बलं ॥ बलं मूर्खस्य मौनत्वं चौराणां मन्दतं बलम् ॥ ८१ ॥ ॥ ॥

लज्जु बल हो ॥ चोरको हुठो बो लज्जु बल हो ॥ ८१ ॥ ॥ ८१ ॥ ॥

स्वलिखी

॥ चान ॥

॥ २१ ॥

कोहिनकुन्या अनाथको दरिद्रको बालकको उठाको तपस्वीहरुको अन्यायप
र्षीको रुकराजामात्रै गति ॥ अर्को छैन ॥ ८१ ॥ रोगीको निर्धनीको शत्रुको डर

अनाथानां दरिद्राणां बालवृद्धतपस्विनां ॥ अन्यायपरिभूतानां स
र्वेषां पार्थिवो गतिः ॥ ८२ ॥ व्याधितस्यार्थहीनस्य शत्रुभिस्त्रा
सितस्य च ॥ हृदये शोकदग्धस्य सुहृद्दर्शनमौषधं ॥ ८३ ॥

ले उक्तकुन्याको हृदयमा शोकले डग्याको मनुष्यको औषध सज्जनको दर्
शनभया संतोष जुंछु ॥ ८३ ॥

॥ रामः ॥

॥ २१ ॥

रोगभयामा केही बडो आयत्त पय्यामा राजका द्वारमा श्मशान जाँदामा ॥ आडन्या
वां धवते सै लार्ह भन्नु अधिपछि को कहा हो ॥ ८४ ॥ मानिस्त्र लार्ह ज्यालु कै काममा

आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुविग्रहे ॥ राजद्वारे श्मशाने वा य
स्ति मृत्ति सवांधवाः ॥ ८४ ॥ भावभुद्धिर्मनुष्याणां ज्ञातव्याः स
र्वकर्मसु ॥ भावेन जुं विताकांता भावेन दुहितानना ॥ ८५ ॥

भावनाजसोग्यो तस्मै भावभुद्धिं जुंछु भावनेमा पापपुण्य जुंछु स्त्रीकन जुं
वन आलिंगनभिन्नै भावलेखारिंछु छोरीको जुंवन कौषमालिनु भिन्नै भावलेख

॥ ८५ ॥

॥ ज्ञान ॥

॥ २२ ॥

काठमा. पुंगामा. माटोका मूर्तिमा. देवता छैन ॥ जाहाभावनागम्यो. वाही देवता
ऊँछ. समदेषिवडोमंनु. भावनैछ ॥ ८६ ॥ शिष्यको देवता गुरुहो. गुरुको दे

न देवो विद्यते काये पाषाणो न च मृगमये ॥ भावे भुविद्यते देव.
स्तस्माद्भावो मत्तरं ॥ ८७ ॥ शिष्याणां देवता चार्यो. ज्ञानमा
चार्य देवता ॥ देवतायोषितां भर्ता वासुणो जन देवता ॥ ८८ ॥

वता ज्ञानहो. स्त्रीको देवता पुरुष ॥ समको देवता वांस्त्राङ्गुन ॥ ८९ ॥

॥ रामः ॥

॥ २२ ॥

वांस्त्रा लाई ॥ आगोजस्तो देषनु. गुरु लाई देवता जस्तो देषनु. आमा लाई प
थी जस्तो देषनु. मित्रकनछो राजस्तो. पुत्र लाई पनि मित्रे जस्तो देषनु ॥ ९० ॥

विप्रं पश्य यथा वह्निमाचार्यं पश्य देवतां ॥ पृथ्वीं पश्य यथा माता.
मित्रं पश्य यथा पुत्रं ॥ ९१ ॥ गुरुरनिर्दिजातीनां वर्यानां वांस्त्र
णो गुरुः ॥ पतिरेको गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ॥ ९२ ॥

वांस्त्राको गुरुः अग्निचारै वर्याको गुरुः वांस्त्रा. स्त्रीको गुरु पुरुष. सबैको गुरु

॥ ज्ञानिय ॥ ८६ ॥

॥ वन ॥

॥ २३ ॥

उत्तमजातिकाघर नीचजाति शुभागत आयापनि ॥ यथायोग्य पूजागर्नु
सर्वेकोऽप्युर्वी आयाको गुरुजस्तोहो ॥ ६० ॥ देवताकन भक्तिभावनागरि

उत्तमस्यापि वर्णास्पतीचोपि गृहमागतः ॥ पूजनीयो यथा न्या
यं सर्वस्याभागतो गुरुः ॥ ६० ॥ देवतापूजयेदन्त्याभत्यादाने
न पूजयेत् ॥ श्रद्धा पूज्योपचारेण विप्रः प्रणतिवन्दनात् ॥ ६१ ॥

पूजागर्नु ॥ चाकरकन केही दी संतोषगर्नु ॥ उपकारगरी भूदको सन्मान
गर्नु ॥ ब्राह्मणालाई दंड वत् प्रणामगरी संतोषगर्नु ॥ ६१ ॥ ॥ ॥

॥ रामः ॥

॥ २३ ॥

धर्मकामूलराजा ऊर्जन् तपकामूल बांस्त्रराजन् तत्कारण जस्र्ठाडं मा बांस्त्रराको
पूजा ऊं छन् ॥ ताहा सर्वदा धर्म रहं छन् नाश ऊं दैन ॥ ६२ ॥ आचारदेवि

धर्मस्य मूलं राजानः सत्पौमूलं च बांस्त्रराः ॥ ब्राह्मणाय नमः पूज्यं ते
तत्र धर्मः सनातनः ॥ ६२ ॥ आचारात्फलते धर्म आचारात्
फलते धनम् ॥ आचारात्फलमाप्नोति त्याचारो हं त्यलक्षणम् ॥ ६३ ॥

धर्म ऊं छन् आचारै देवि धनपनि ऊं छन् आचारै गम्या सर्वकार्य फल छन् ॥ आ
चार ले ॥ अलक्षणीयनि नाश ऊं छन् ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ चान ॥

॥ २४ ॥

स्वात्माकरोमा स्वानुसकनु सुंदरी स्त्री सितभोगपनिगर्नुसकनु संपति भै
कन दानपनिगर्नुशकनु स्तितस्वानुतपस्यालेऊ दैन ॥ २४ ॥ बालकैमा

भोगंभोजनशक्तिश्चरतिशक्तिर्वरस्त्रियः ॥ विभवोपानशक्तिश्च
नाल्पस्यतपसःफलं ॥ २४ ॥ बालेचैवचरेधर्मे अनित्यंखलु
जीवितं ॥ फलानामपिप्रकानांशाश्चतंयतनंभवेत् ॥ २५ ॥

धर्मगर्नु जीवदुभन्याको अनित्यछ भरेभोलि कैले मर्नछ थाहाछैन फ
लपनिवाक्यापछि अवस्यरुछ तसैनिउनुभनिजानु ॥ २५ ॥

॥ रामः ॥

॥ २४ ॥

दंभीकोधर्मव्यर्थ क्रोधीकोतपव्यर्थ दृढचित्तनरुन्याकोज्ञानव्यर्थ ॥ प्रमादले
पद्माकोवेदव्यर्थ ॥ २६ ॥ अग्निप्रज्वलितनभैहोमगयाकोव्यर्थ साक्षिन

सदंभश्चहतोधर्म क्रोधेनैवहतंतपः ॥ सदृढस्यहतंज्ञानंप्र
मादेनहतंश्रुतं ॥ २६ ॥ अदीप्रेग्नौहतोहोमोहताभुक्तिर
साक्षिणी ॥ उपजीव्याहताकन्या स्वार्थेपाकहताक्रिया ॥ २७ ॥

राघिरवायाकोअन्नआदि व्यर्थ धनमाल वरछेउ। लीकनकन्यादानदिया
को व्यर्थ ॥ आर्क्रेनिमित्ततात्रपाकगयाको व्यर्थछ ॥ २७ ॥

॥ चान ॥

॥ २५ ॥

दरिडी भया को रोगी भया को बंधन भया को केही ब्येसन भया को ॥ सति थोक अ
घिष्टा जन्म मा दान नगया को हो तस्कार रा दान गदै रहनु ॥ २८ ॥ धान

दरिद्र व्याधि दुःखानि बंधनं व्यसनानि च ॥ अदानु फलमेता

नितस्माददानं विशिष्यते ॥ २८ ॥ उत्तका इव धान्येषु पुत्रिका इ

व जंतुषु ॥ तादृशास्ते मनुष्येषु ये च धर्मवहिः कृताः ॥ २९ ॥

काप्यदा जस्ता जंतुमहा का छिचिमिला जस्ता धर्मन भया कामनुष्य तस्यै
जंछ ॥ २८ ॥ दुर्जन का संसर्ग छोडि साधु को संग गर रात दिन पुरण गर

॥ २५ ॥

॥ रामः ॥

॥ २५ ॥

नित जस्ता संसार अनित्य जंभनि चान क्य ऋषी लेशिष्य हर लाई भंदा भ
या ॥ १०० ॥ इति श्री चान के सार संग्रहे भाषायां प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

त्यजे दुर्जन संसर्गो भज साधु समागतम् ॥ कुरु पुराणमहोरात्रं

स्मरन् नित्यमनित्यतां ॥ १०० ॥ इति श्री चान के सार संग्रहे प्रथमः सर्गः

तकं समाप्तम् ॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ शास्त्रार्थ चक्षुषा दि

घान्न रेशो नीति चक्षुषा ॥ वेदार्थ चक्षुषा विप्र इतरै चार चक्षुषा ॥

पंडित शास्त्र का आषा ले हे छं न राजा नीति का आषा ले हे छं न वेद का आ
षा ले वांछरा हे छं न अरु मनुष्य चर्न चक्षु ले हे छं न ॥ १ ॥

॥ १०० ॥

॥ वान ॥
॥ २६ ॥

राजाधर्मिष्ठमया प्रजापतिधर्मात्मा कुंछन् राजावापीमया प्रजापतिमापी
कुंछन् ॥ याप प्रणवरोवरगर्वा राजाभया प्रजापति कुंछन् राजाज्यागर्हन्

रातिधर्मिणिधर्मिष्ठा यापेयापसमेसमा ॥ राजात्रमनुवर्तते

यथाराजा तथा प्रजा ॥ २ ॥ उद्यमं साहसं धैर्यं बलं बुद्धिं

पराक्रमं ॥ षडेते यस्मिन्तिष्ठन्ति तस्यां देवोपि शंकिते ॥ ३ ॥

सोहि प्रजापतिगर्हन् ॥ २ ॥ उद्यममयो साहसमयो धैर्यमयो बलम
यो पराक्रममयो स्तिष्ठन्तु राजसूते कुंछन्तस्मनुष्यदेवि देवपनि इरा

॥ २६ ॥

॥ २६ ॥
रामः ॥
॥ २६ ॥

१२

जिभाकाटुप्यामालक्ष्मीवसूहिन् मित्रयनि भाईयनि सररापनि निश्चय
जिभामाहन् ॥ १२ ॥ मित्रो कुरो बोला पछि सवै प्रसन्न कुंछन् ॥ तस्कार

जिह्वायेवमते लक्ष्मी जिह्वाये मित्रवांधवाः ॥ जिह्वाये वंधनं

चापि जिह्वाये मरणं कुर्वं ॥ १२ ॥ प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तु

प्यंति जंतवः ॥ तस्मान्न देववक्तव्यं वचनं किं हरिदत्ता ॥ १३ ॥

१२

रा. पियारोला गुन्या कुरो बोला नु वचनमा कान हरिदत्ता ॥ १३ ॥

१३

१३

॥ चान ॥
॥ २६ ॥

घरभा. आगोसलकाईदिन्या. विपुत्रवाउन्या. हातलेहतिवारलीकाइनु
आइन्या. धनहरन्या. स्वास्त्रिहर्न्या. खेठहर्न्या. एतिलाईआततायीभन्नु

॥ १४ ॥

अग्निदोगरदध्वैवशस्त्रपाणिधर्मापहा. ॥ क्षेत्रदारापहारीच
घडेतेआततायिन. ॥ १४ ॥ आततायिनमायांतमपिवेदांत
पारगम्. ॥ सिधांसंतंजिधांसीयान्नतेनबुल्लहामवेत्. ॥ १५ ॥

भी

१४ ॥ वेदपारगयापनि. आकुलाई. मारु. आउन्या. आततायीलाईमा
नु. तेसलेबुल्लहत्यालाग्येन. ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥

॥ रामः ॥
॥ २६ ॥

सत्यधर्ममा. तत्परभैकन. राज्यकोपालनागर्नु. शत्रुकोसत्यलाईजितिकन
प्रजालाईधर्मलेपालनागर्नु. ॥ १६ ॥ कुलकुलपिकन. जरोनउखेली.

राष्ट्रं चपालयेन्नित्यं सत्यधर्मपरायणाः. ॥ निर्जित्यपरसैन्यानि
प्रजाधर्मेणपालयेत्. ॥ १६ ॥ पुष्पं पुष्पं विचिनुयात् मूलं
दंनकारयेत्. ॥ मालाकारइवांगानियथाजायातिसारताम्. ॥ १७ ॥

न्यापारिजसोमालिले. वगैचामाविचारगईन्. ॥ तत्तेराजालेपनि. प्रजा
लाईउखनदीकनकरलाउनु. ॥ १७ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १७ ॥

॥ चान ॥

॥ ३० ॥

योशत्रु योमित्र योउदासीन योमध्यम योउदो योगुरुभनिबुद्धदेन योघटि
यादुहिभयाकोनाशिंदू ॥ १८ ॥ आक्र आमदानीभंदा अघीलोखर्वगर्ना वि

अरिमित्रं उदासीनमध्यस्थं स्थविरो गुरुं ॥ योनबुधतिमंदात्मा

सच सर्वत्र नश्यति ॥ १८ ॥ अनायमयकर्ता च अनर्थकलहप्रियः

आतुरे सर्वभक्षी च नरः शीघ्रं विनश्यति ॥ १९ ॥ १९ ॥ ॐ

प्री

नामर्थकलहगर्ना रोगलाग्यामा सवैथोकषान्या ससामानी सचाडेना
सी जांछ पयूदेन ॥ १९ ॥ ॐ ॐ ॐ

॥ रामः ॥

॥ ३० ॥

३

हरि कवि

कालकौनछ कोमित्रछन् कौनदेशहो काखर्वजंछ काआमदछ म कौन
ऊन मेरोशक्तिकतिकोछ योवारंवार चिंतनागदैरहनु ॥ २० ॥ सिंहदेवि

कः कालः कानिमित्राणि कोदेशः कोव्यागमौ ॥ कश्चाहंकाचमे

शक्ति रिति चिंत्यं मुकुर्जु ॥ २० ॥ सिंहादेकं वकादेकं शिखे चत्वा

रिज ऊपत् ॥ कायसान्पंचशिखे च षट् शुनत्री शिगर्भात् ॥ २१

रुक् गुरा वऊः त्रदेवि रुक् गुरा ऊपरादेवि चार गुरा कौवादेवि पांच गुरा
ऊऊदेवि छ गुरा गसहादेवि तीन गुरा ॥ एतिसिक्कनुभंछ ॥ २१ ॥

२१

॥ नान ॥

॥ ११ ॥

हुलोकामभयापनि सानु कामभयापनिसवै कार्य तत्परभै कन सिंहकोचहर्षाई
गर्नु ॥ १२ ॥ सबइंदियलार्ई कन वक्र धारै परि आया कावेला मा कार्यगर्नु वक्र

प्रभत कार्य मलं बायो नर कर्तु सिद्धि ॥ सुवीरं भेषु तत्कार्यं सिं
हादेकं विधीयते ॥ १२ ॥ इंदिया शितु संगम्यः वक्र वत्पंडितो न
रः ॥ कार्य कालोपपन्नानि सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ १३ ॥

छासंग एक गुलालिनु ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥

॥ रानः ॥
॥ ११ ॥

विहानै उठन्या पुद्गल्या बंधवर्गलार्ई वाडिबानु स्वास्त्रिलार्ई बलै सित
भोगगर्नु ॥ सतिचारकुरो कुरुरादे धिशिकनु गुरामया कौकसै कोपनिलिनु

आगुत्थानं च पुद्गं च संविभागे च वंधुषु ॥ स्त्रियमाक्रम्य भुंजीत
शिक्षेच्चत्वारि कुकुरात् ॥ १४ ॥ गृहमेधुनधर्तृत्वं काले चालयसं
ग्रहं ॥ अप्रमादमविश्वासं पंचशिक्षेच्च वायसात् ॥ १५ ॥

१४ ॥ गोप्यगरीमैधुनगर्नु कर्तुनु वेला माहा ॥ घरलाउनु ॥ नमाननु ॥ वि
श्वासकसैकोनमांनु ॥ सतिपाच थोक कौवा देधिसिकनु ॥ १५ ॥

॥ चान ॥

॥ ३२ ॥

॥ ५ ॥

॥ श्री ॥

पायाटेरैषानु नपायाथोरैलेसंतुष्टकन्या थोरैनिडाकन्या ॥ चाडैचैतन्य
कन्या स्वामिकाभक्तिराघनु मूरोपनिऊनु ॥ एतिछयोक्कककरकासिकनु ॥

वहाशीचात्यसंतुष्टसुनिडः शीघ्रचेतनः ॥ स्वामिभक्तभस्मर
भयडेतेभानतोगुणाः ॥ २६ ॥ अविश्रांतं वहेझारं शीतोत्प्लेनच
विंदति ॥ संतुष्टं च भवेन्नित्यं त्रीणि शिरोचुगर्दमान् ॥ २७ ॥

२६ ॥ नविशाईमारीवोकन्या ॥ चिसोतातोपनिनमांन्या सर्वदासंतोषैमां
न्या ॥ इतीनगपाहाकासिकनु ॥ २७ ॥ २७ ॥ २७ ॥

॥ रामः ॥

॥ ३२ ॥

॥ २५ ॥

इजोवीशगुणभन्याका जोचतुरल्लिखन् सोमनुष्य सवेशचकनजिति सवे
लेजितनुपमिऊं ॥ २८ ॥ तिमिशायछौ हाभिपोंचछौ परस्परतिमाहमा

विंशत्येतेगुणाप्रोक्ता यस्तु कुर्यादिचक्षराः ॥ सजैष्यतिरिपू
सर्वानजेयश्च भविष्यति ॥ २८ ॥ यूयं शतवयं पंच विरोधं च
परस्परं ॥ परैराक्रम्यमाणोतु ॥ वयं पंचोत्तरं शतं ॥ २९ ॥

वैरह्यनपनि अर्कोशतु झाईलाफा तिमिहाभिपोंच अधिकशयछौमनि ॥
उधिष्ठिरले तुय्योधनछेउंभन्या ॥ २९ ॥

॥ २ ॥

॥ वान ॥

॥ ३३ ॥

आफु छुटि यीछ मर्मको कुरो ले काटी परस्पर वैर गरी नमिल्या पनि दाजु भाई के
री मिलि छन् जोश उहो उश बुर हंछ आफु कुँदै न ॥ ३० ॥ मूर्ख न ऊ न्या मानि स

हिला भित्ता चर्म रीणिः कृत्वा चैरम शांतकं ॥ ज्ञातयः समतां या
नियः परः परस्तसः ॥ ३० ॥ अमूर्खो यो मनुष्याणां मनुः संतप
चेतसां ॥ परस्पर अपकारेण पुंसां भवति विग्रहम् ॥ ३१ ॥

निरर्थ चित्त नाश गरी परस्पर अपकार ले मात्र सा धुजन को विग्रह होला ॥ ३१ ॥

॥ रामः ॥

॥ ३३ ॥

पेट सगोटा टाड को दुई भया को भैरुं डापेंछि सजु मा साधना गरी दिडेछ आ
फु शत्रु जानि नर भैरुं डाको नाश भयेछन् तलै शत्रु मित्र बुझुछ ॥ ३२ ॥

सको दराध थग्री बा ये चरंति महार्ता वे ॥ असा ध्यता विनश्यंति
भैरुं डा इव पक्षिणाः ॥ ३२ ॥ यसने सति कुर्वति येन केनापि
संहति ॥ अश्वानर गोपुछैः पुरादा शरथिर्यथा ॥ ३३ ॥

आपदा मा कसै छे उभया पनि भजना गरी तारणा गरेछ ॥ श्री राम ले पशु ग
रा को पछर समार्ई मित्र गरी आफु आपदा तारणा गरेछन् ॥ ३३ ॥

॥ चान ॥
॥ ३४ ॥

टेरै वदो लभै आया सानु भयापनि हलक गर्नु छैन वानर गण मान ले समुद्र मा
सेतु बंधनाग छैन श्रीराम ले ॥ ३४ ॥ मनुष्य को ज्वर भन्या को चिंता हो घोडा को

उत्तर सागर तीर्ण समग्र वानर बल ॥ अभूत पूर्व रामे रासेतु
बंध भव सागरे ॥ ३४ ॥ चिंता ज्वरो मनुष्या रा मश्वाना मै धुन
ज्वर ॥ असौ भाग्य ज्वर स्त्री रा वस्त्रा रा मान दो ज्वर ॥ ३५ ॥

ज्वर मै धुन हो अस्त्री को ज्वर पुरुष न भया को कपरा को ज्वर घाम हो ॥ ३५ ॥

॥ रामः ॥
॥ ३४ ॥

मानी सुलाई लको होरो हिडनु वदः नहि डाया घोडा वद मै धुन नग म्या स्त्री वद
घोडा को मै धुन वद हो ॥ ३६ ॥ अर्का का अधीन भया का जिउनु वडो कठिन कसे

अध्वज रा मनुष्या रा मन धा वाजि नां जरा ॥ अमै धुनं जरा स्त्री रा
मश्वानां मै धुनं जरा ॥ ३६ ॥ कष्टा वति पराधीना कष्टं वा सोनि
राश्रयः ॥ भूत पूर्वा र्थ संयुक्तं सर्व कष्टं हरि डाता ॥ ३७ ॥

को आश्रय ग वास व सनु यनि कठिन अधि धनी पछि कंगाल भया को यत्रि कठिन

॥ ३७ ॥

॥ चान ॥
॥ ३५ ॥

सर्वदा मागन्या १ रोगी २ मूर्ख ३ विदेशी ४ चाकरी ५ ॥ इयोंच सर्वदा को जिउं दाहृत
पनि मया वरीवर अभागी भंनु ॥ ३८ ॥ अर्की को घर नित्य २ जांछु न. नित्य बोला

अर्थि तो व्याधितो मूर्ख प्रवासी पर सेवक ॥ जीवतो पि मृताः पंच
पंचैते दुःख भागिनः ॥ ३८ ॥ यो यत्र नित्य मायाति भुक्तं चापि दि
ने दिने ॥ सतत लघुनां याति यद्विश कसो नरः ॥ ३९ ॥ ॥ ३३

ईखांछु सतिगर्ण्या मानि सुइं द समभया पनि हलक भंनु ॥ ३९ ॥ ३९ ॥

॥ रामः ॥
॥ ३५ ॥

३८

अर्की को अन्न वस्त्र अर्की को चर्ह्या माचहुनु परखी गमनगर्ण्या अर्की को घर मा
वसनु इंदु लुह्य भया पनि लक्ष्मी धृती ऊंछु ॥ ४० ॥ धन भया को छैनत पनि

परान्न पर वस्त्र च घर पानं परस्त्रियः ॥ परस्य च गृहे वा सो शक्र
स्यापि श्रियं हरेत् ॥ ४० ॥ अशोचो निर्धनो विद्वान् शोच्याः पुत्र
वान्नरः ॥ अशोच्या विधवा नारी पुत्रपौत्र प्रतिष्ठिताः ॥ ४१ ॥ ॥ ३३

पंडित छुत शोक नगर्नु पुत्र भया को मनुष्य को धन छैनत पनि शोक नगर्नु ॥
छोरानाति भया को विधवा भया की छुत पनि शोक नगर्नु ॥ ४१ ॥ १ ॥

३८

३८

३८

॥ चान ॥

॥ ३६ ॥

धन भया को मनुष्य को सब मान गछुन मनुष्य को शरीर को मान को हि गदैत
चाडाल छत पनि जस्का धन वहुत छ सो हि हु लो ॥ ४१ ॥ धर्म भया को पनि धने

विमवेसति पूज्यते न शरीराणि देहिनां ॥ चाडालोपितः श्रेष्ठो
यस्यास्ति विपुलं धनं ॥ ४२ ॥ धनमाहुः परं धर्मं धने सर्वं प्रतिष्ठि
तम् ॥ जीवन्ति धनिनो लोके मृता ये न धनानराः ॥ ४३ ॥ ॐ

लेऊं छुं ॥ धन ले सब को प्रतिष्ठा भारी ऊंछु जो धनी छुन जिउदा उतै कन भंनु
रस लोक मा जो निर्वनी छुन जिउदा छत पनि मये वरो वर छुन ॥ ४३ ॥

॥ रामः ॥

॥ ३६ ॥

वहुत संपनि भयाहुः वषा उंछु भय ऊंछु अति उच्च पर्व न गया वषु पात ऊंछु ॥
अलगो भया पछि निश्चय वरु ॥ ४४ ॥ सर्वे थो कखान्या यो खान्या

अतिसंयदमायने भैत व्यं पतन प्रयं ॥ असु वा शरवरा रूढस्य
त्यं वज्रेणापातितः ॥ ४४ ॥ को भक्षो भक्ष को नित्यं कसु खानि
चरोगिराणं ॥ यस्य भार्या त्वसंनुया क्वचनस्य सुखं गृहे ॥ ४५ ॥

यो न खान्या विचार ऊंदै न सर्वदा रोगि भया को लाई ॥ सुख ऊंदै न जस्की
स्त्री असं नो बीछु तस्का घर मा कै हू सुख छै न ॥ ४५ ॥ ४५ ॥

॥ चान ॥

॥ ३७ ॥

रतिगर्भामनुष्पकनमहा सुभिधं कुंछ निरोगीकन महा सुखे छ जस्की स्त्री आ
क्रावश छ तस्का घर नित्य उत्सव छ सुख पनित्य सलोई छ ॥ ४६ ॥ परा ॥

॥ ४७ ॥

सुभिधं कर्षते नित्यं सुखं नित्यं मरो गिरां ॥ भार्या मनुर्वशा यस्य
तस्य नित्योत्सवं गृहे ॥ ४६ ॥ सर्व पर वशं दुःखं सर्व मात्म वशं सु
खं ॥ सतद्विद्या समासेन लक्षणां सुख दुःखयोः ॥ ४७ ॥ ४७

कावश पर्नु सव भंसा दुःख हो आ क्रावश सव भया क सैको अंकुशन भया का ॥ रामः ॥
बरोवर सुख छैन सुख दुःख को संक्षेप कारणा रति भनि जांनु ॥ ४७ ॥ ॥ ३७ ॥

१ शीज साधे नमः — श्रीगुरु गने साधनमह

रति श्री

सुख भया पछि दुःख दुःख भया पछि सुख कुंछन स्कारा सुख दुःख रथ
काचकी जै पुम छन् ॥ ४८ ॥ वज्र ते मूर्ख को समुदाय भया पशु का जै दु

सुख स्यान्तरं दुःखं दुःख स्यान्तरं सुखं ॥ सुखं दुःखं मनुष्या
णां चक्रवत् परिवर्तते ॥ ४८ ॥ वज्र भिर्मूर्ख संघातैरन्योन्यं प
शुवृत्तिभिः ॥ छादयति गुराण् सर्वान्मेघैरिव दिवाकरः ॥ ४९ ॥

द्विगन्या लेभता मनुष्पको गुरा मेघ ले सूर्य लाई ठाक्या जै ठाक छ ॥ ४९ ॥

॥ चान ॥

॥ ३८ ॥

साधु असाधको संग भया घटिया बोला उंछु मदेवे चन्पाले ददल्याया पनि
मदे होला भनि छुन ॥ ५० ॥ असाधु सित संसर्ग भया साधु पनि असाधु उंछु

असतां सह संगे न को नया त्वधमांगति ॥ ययोपि सौ दिनी ह
ते न घमि त्यभिधीयते ॥ ५० ॥ असत्संपर्क दोषे रा अधमायां
ति साधवः ॥ मार्गे ति निर दोषे रा समोपि विष मायते ॥ ५१ ॥

अध्यारो भया पछि वरो बरवाटो पनि उच रत्ना लदे विंछु ॥ ५१ ॥ ९ ॥

॥ रामः ॥

॥ ३८ ॥

उत्तम संग गन्था घटिया पनि उत्तम कुंछ फल सित उन्था को तरा पनि शर मा ला
ईछु ॥ ५२ ॥ भला सित संगत भया पनि स्वभाव दुर्दै न आ मुका फल भित्र को

उत्तमैः सह संगे न को नया तिस मुन्नतिम् ॥ मूर्च्छा तरा निधार्य
ने यथितैः कुसुमैः सह ॥ ५२ ॥ किं करिष्यति संपर्कः स्वभावो दु
ति क्रमः ॥ यथा सुफल मध्यस्य कथा यो लाभतांगतः ॥ ५३ ॥

को योग अमिलो गुलियो कुंदैन ॥ ५३ ॥ ५३ ॥ १० ॥

५४/५५ पी

॥ चान ॥

॥ २२ ॥

शखरहाय भारी हाती कन नीमका कल रोप्या पतिमह दूर सदा छिंकें देर
ह्या पति नीम गुली यो कुंदैन ॥ ५४ ॥ उस कमा लेख्या का विद्या पराई का हा

शर्करा शत भारे रा मधो निंबं प्रतिष्ठितं ॥ मधु क्षीर समावृष्टि
निम्बः किं मधुरायते ॥ ५४ ॥ उसके उचया विद्या परह स्तेषु
उद्धनं ॥ कार्य काले च सं प्राप्ते न सा विद्या न तद्धनं ॥ ५५ ॥

तदिया को धन काम परि आया का वेला मा त्पो विद्या पति धन पति काम तर्देन

॥ रामः ॥
॥ ३२ ॥

ताडा भया को मित्र प्रीति न भया को भाई का काम पाहियला माग्या को न पा
या जस्तो हो ॥ ५७ ॥ वन ता को डल ताडा भया को बंधु वर्ग भिना मा ले

दूर स्थानि च मित्राणि निस्त्रेहा भवैव बांधवाः ॥ प्रयोजनं किं
कर्तव्यमर्थिते निष्फलानि च ॥ ५६ ॥ अट व्या दुम प्रव्या रि दूर
स्था भवैव बांधवाः ॥ कोता चालेख भूता च यः काले नोपतिष्ठति ॥ ५७ ॥

रही राष्पा का स्त्री सति काम मा आ उं दैन नि श्रय हो ॥ ५७ ॥

॥चान॥

॥४०॥

उदितेहीनभयाको कर्मलेहीनभयाको मनुष्य जिउनवर्थछ खरानीमा
आहुतिहास्याजस्तोहो ॥५८॥ बोकाको घुइ ऋषीको आश्र पातः काल

प्रज्ञावचनहीनश्च कर्महीनश्च योनरः ॥ निरर्थाश्चेतनाय
स्य भस्मन्याहुतयो यथा ॥५८॥ छागघुइं ऋषिआइं प्रभाते
मेघडंबरं ॥ दंत्यो कलहश्चैव क्षणमात्रं न तिष्ठति ॥५९॥

माभयाको मेघः स्त्री पुरुषको कलहः क्षणमात्रं यनिरहदैन ॥ ५९ ॥

॥रामः॥

॥४०॥

रूपनीमानि स्रद्धेउ को सेवा डरले हतपतले रतिगन्याको रोगी मनुष्यले स्त्रीसं
भोगगन्याको दोषले पुक्तभयाको बाह्यरालेपत्याको वेदनिष्फलमंछन ॥

निष्फला रूपरो सेवानिष्फलारतिचातुरे ॥ दोषसंपुक्तशील
स्य श्रुतिर्विप्रस्य निष्फला ॥ ६० ॥ अहिरण्यमहासीकं गृहगो
रसर्वज्जितम् ॥ प्रतिकूलकलत्रं च नरकस्यापरो विधिः ॥ ६१ ॥

६० ॥ दोलथभयाको दासदासीनभयाको गाइको दूदनभयाको ॥ मन्यामाहो
विकल्पतोगर्ण्यास्त्री सतिनरकमंनुतेहीहो ॥ ६१ ॥

॥ वान ॥

॥ ४१ ॥

स्वस्ति श्री

वडा ले वडा कुल की कन्या नरामी भयापति विवाहर्नु नीचको रामी छन पनि
विवाहन गर्नु वरोवर कुल मागर्नु ॥ ६१ ॥ विष बाट पनि अमृत भिकि लि

वरये कुल नां प्राप्ति विरूपामपि कन्यकां ॥ सुरुपिणी न नीच
स्य वैवाह्यं सदृशः कुले ॥ ६२ ॥ विद्या दप्य मत्तं ग्राह्यं ममेध्याद
पिकांचनं ॥ नीचादसुतमां विद्या स्त्रीरत्नं दुकुलादपि ॥ ६३ ॥ ॐ

नु ॥ अपवित्र देविपति सुवर्णालिनु नीचमनुष्य देविपति उत्तम विद्याभा
यालिनु ॥ स्त्रीरत्नभया घटिया कुल देविपति लिनु ॥ ६३ ॥ ॥

॥ रामः ॥

॥ ४१ ॥

स्वस्ति श्री

कस्का कुलमा दोष छैन कस्तार्द्र रोग भयाको छैन व्यसन कस्तले पायाको
छैन लक्ष्मी सदा कस्का कुंछ ॥ ६४ ॥ दोष गुरान भयाको प्राणी छैन वडत

कस्य दोषं कुलेनास्ति माधिना कोन पीयते ॥ केन न व्यसनं प्रा
प्तं कस्य श्रीश्वनिरंतरां ॥ ६४ ॥ दोषोप्यस्ति गुरोप्यस्ति निगुरो
षपि जंतुषु ॥ सुकुमारस्य पद्मस्य ना लोभवति कर्कशां ॥ ६५ ॥ ॐ

कोमल कमल छन पनि दोंट माहा काठाले षओछ ॥ ६५ ॥ ॐ ॥

॥ चान ॥
॥ ४१ ॥

शिशिरऋतुमा अग्नि अमृत क्षीरभोजनयनि अमृत गुणावती स्त्रीयनि अ
मृत बालवकोवोलीयनि अमृततुल्यहो ॥ ईई ॥ प्राकृतसंस्कृतवारी अय

अमृतं शिशिरं वह्नि अमृतं क्षीरभोजनम् ॥ अमृतं गुणावती भार्या
ह्यमृतं बालभाषितम् ॥ ईई ॥ दुर्ध्वभा प्राकृता वारी दुर्ध्वभश्च स
मी प्रभुः ॥ दुर्लभा च सुहृन्मारी दुर्लभं वचनं प्रियं ॥ ई० ॥ ॐ

राधमाफगर्भा प्रभु प्रियवो लन्या स्त्री पिशा रो लाग्न्या वचन सति दुर्लभं ऊंछ ॥ ई०

॥ रामः ॥
॥ ४२ ॥

नदीविषयमागंगा स्त्रीमा पतिवृत्ता मानीस्मा राजा देशमा मित् दो श्रेष्ठं
नु ॥ ई० ॥ क्षोरा नाती सवै प्रकारले दासी दासले पुक्त भया को घर छत पति स्त्री रहि

नदीनां जां हू वी श्रेष्ठानारीणां च पतिवृत्ता ॥ मनुष्याणां नृपं प्रा
कृ देशानां यत्र निवृत्तिः ॥ ई० ॥ उत्र पौत्रसमा कीर्णा दासी दा
ससमा कुलं ॥ भार्या विरहितं पुसां यथारण्यं तथा गृहं ॥ ई० ॥ ॐ

तच्छत त्वोगृह अरण्यवनजस्तो ऊंछ ॥ ई० ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ चान ॥

॥ ४३ ॥

सर्वैरत्नभंडाः स्त्रीरत्नउत्तमः तस्मिन्निमित्तं स्त्रीनभयाधनलेखाप्रयोजनम् ॥

७० ॥ घटियास्त्रीभया कुटुंबनाशकं ॥ कुपत्रलेखलनाशगर्हन् ॥ क

सर्वेषामेव रत्नानां स्त्रीरत्नं हि भूतं नमं ॥ तस्मान्नदर्थनिर

ताः तयात्पक्ताधनेन किं ॥ ७० ॥ कस्त्रीहंति कुटुंबानि कुपत्रे

हन्त्यते कुलं ॥ कुमंत्रिहन्त्यते राजाराष्ट्रं चौरैराहन्त्यते ॥ ७१ ॥

मंत्रिं ते राजा लार्हनाशगर्हन् ॥ चौरलेदेशनाशिनं ॥ ७१ ॥ २ ॥

॥ रामः ॥

॥ ४३ ॥

स्त्रीकोदोषहजारद्वन्द्वं गुणभक्त्यातीन्मात्रद्वन्द्वं पञ्चजन्माईदिनु १ गृह
को व्यवहारगर्तु २ पतिमर्दासाथजानुः सति गुणद्वन्द्वं ॥ ७२ ॥ कविहरले

स्त्रीणां दोषसहस्राणि गुणास्त्रीणि महीयते ॥ गृहाचारसुतो

त्यतिर्मरणां पतिना सह ॥ ७२ ॥ कवीयः किन्नपश्यति किं न

भक्षंति वायसा ॥ अमरा किं न कुर्वन्ति किं न जल्पन्ति मययाः ॥ ७३ ॥

क्या देष्टुं दैनः का कथा थो कथां दैनः स्त्रीलेखा गदैनः सुरापानगर्मा लेखा वकदै



॥ ७३ ॥

॥ चान ॥

॥ ४४ ॥

पुत्र कायातिर स्त्री चाहिंछ पिंड कायातिर पुत्र चाहिंछ हित कुरा देखा उलाभनि
मित्र चाहिंछ सर्व प्रकार आफनै निमित्त चाहिंछ ॥ ७४ ॥ समुद्र ले पृथ्वी वे

पुत्र प्रयोजना भार्या पुत्राः पिंड प्रयोजनम् ॥ हित प्रयोजनं मित्रं
सर्वमात्म प्रयोजनम् ॥ ७४ ॥ समुद्रावरणा भूमि प्राकाराव
रणा गृहा ॥ नरेन्द्रावरणा देशा भ्रू रित्रावरणा स्त्रियः ॥ ७५ ॥

छित छ पर पार ले घर वे छित छ राजा ले देश वे छित छ न चरित्र ले स्वाः
स्त्रि वे छित छ न ॥ ७५ ॥

॥ रामः ॥

॥ ४४ ॥

घर ले पनिरक्षा कुंदैन दाजु भाई ले पनिरक्षा गर्न शकै न ॥ बांधिकन पनिर
क्षा कुंदैन ॥ स्त्री का बढिया शील ले मात्र रक्षा कुंद ॥ ७६ ॥ नदी ले तीर घसा उं

नगरा शिान वासां सिन प्राकार भ्रू रक्षकाः ॥ नवं पुर्नै ववं धोर्वा
स्वशीला हि कुल स्त्रियः ॥ ७६ ॥ नदी यात यते कुलं नारी यात य
ते कुलम् ॥ नारी शां च नदी नां च स्वछंद ललिता गति ॥ ७७ ॥

छ स्त्री ले कुल घसा उं छ न नदी र नारी स्व छंद गति छ न ॥ ७७ ॥ १ ॥



॥ चान ॥

॥ ४५ ॥

लहराले आक्रान जीक का वक्षसमा उंछन् राजाले न जीक को सेवक पत्न्या
उछन् स्त्रीले पनि न जीक का पुरुष नुत्पा उंछन् स्मृमा संदेह छैन ॥ ७८ ॥

लता पार्श्व स्थितं वक्षं भूतं पार्श्व स्थितं नृपः ॥ पार्श्व स्थं पुरु
षं यो धिक् रवेष्टयंति न संशयः ॥ ७८ ॥ नैव पश्यति जातं धः का
मां धौ नैव पश्यति ॥ न पश्यंति मदीन्मतः श्रुती दोषं न पश्यति ॥ ७९ ॥ ॐ

जन्मै देषी को अंधा काम को अंधा अहंकारी धन ठेर कुन्या सति ले देव दैन ॥
अंधी भन्नु ॥ ७९ ॥

॥ समः ॥

॥ ४५ ॥

मनुष्य को षाड्पच्चा को अन्न वयस गया की स्त्री संग्राम वा दजिति फर्कि आया
को भ्रर ॥ घर त्याई पुग्या को अन्न सति सहा उंछन् ॥ ८० ॥ लक्षणा हीन मनुः

जीर्ण मन्त्रं प्रशंसंति भार्या च गत यौवनां ॥ रक्षा प्रत्यागतं भ्रं
शस्यं च गृहमागतं ॥ ८० ॥ लक्ष्मी लक्षणा हीने च कुल हीने स
रस्वती ॥ अयात्रे रमते नारी गिरौ वर्धते वासवः ॥ ८१ ॥ ॐ

पछे उ को लक्ष्मी हीन कुल मा विशा भयात्रमा लागी रहन्मा स्त्री वर्धत
मा वर्ध्या को पानि काम ला दैनन् ॥ ८१ ॥ ८१ ॥ ८१ ॥

॥ चान ॥
॥ ४६ ॥

जस्की स्त्री नरा मी कलहगर्भा प्रतिवादी रुगरिया तेस पुरुष लाई बुढो भं
नु बुढो लाई बुढो भंदैन ॥ ८२ ॥ जस्की स्त्री सुरूप को मल मन पदो गन्धि

यस्य भार्या विरूपाच कश्मली कलहप्रियाः ॥ उत्तरोत्तरवादी
च साजरान जरा जरा ॥ ८२ ॥ यस्य भार्या सुरूपाच भर्तार
मनुगामिनी ॥ नित्यं मधुरभाषी च साश्रियानश्रियाश्रिया ॥

मिठो बो लन्पा तस्का लक्ष्मी तेही हो संपति लाई लक्ष्मी भंदैन ॥ ८३ ॥

॥ रामः ॥
॥ ४६ ॥

जस्की स्त्री कुकु नी जस्तोगर्जी छी तस पुरुष का शरीर शिशिर माहि उपाया
को कमल रंग दै जा छुन ॥ ८४ ॥ जस्की स्त्री घर मा आमा ले हित ग्या रंग छ

यस्य भार्या गृहे नित्यं भुनी वपरि गर्जति ॥ तस्य सीदंति गात्राणि
पद्मिनी वहि मागमे ॥ ८४ ॥ यस्य भार्या गृहे चैव तातै वहित कारि
णी ॥ वर्द्धते तस्य गात्राणि भुरूप से यथाशशी ॥ ८५ ॥ ९ ॥ ९

तस पुरुष को देह भुरूप से को चंद्रमा वट दा रै वट छ ॥ ८५ ॥ ९ ॥ ९

॥ चान ॥

॥ ४७ ॥

शोकसंतापदिन्याहोराटेरैभयालेकागर्ज कुलकनथामन्यासा पुदिशावं
नरकैभयानिकोडु ॥ ८६ ॥ सकीखीतीनहोरा उईहलो दशगईडहना ॥

किंजातेवजुभिः पुत्रैः शोकभ्रतापकारकैः ॥ वरमेकं कुलालं
वीयत्रविभ्रास्यते कुलं ॥ ८६ ॥ सकामार्थत्रयः पुत्रा देहली
दशधेनवः ॥ कन्याकालावसाने च न तेषां स्यति विक्रियां ॥ ८७ ॥ ॐ

पछिवाट सककन्याजस्काछ नृत्यो मनुष्यलाई गाहोपदेन ॥ ८७ ॥

॥ रामः ॥

॥ ४७ ॥

पुरुषले होराटेरै उत्पन्नगराउनु सवै गयासागई पिंडनदिया सकअवश्यजा
लागयानगया अश्वमेधकोपरापकुन्या नीलवधोत्सर्गतागली ॥ ८८ ॥

सयव्यावहवः पुत्रायद्येकोपि गयां वुजेत् ॥ यजेद्वा अश्वमेधेन
नीलं वा वधमुत्सृजेत् ॥ ८८ ॥ सकेन भुक्त्वा होरापुच्छितेन दत्तमा नेवदि
कुम्भिना ॥ दह्यते न वने सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा ॥ ८९ ॥

सकैशुकाको वक्षमा आगोलायापछि सववन जत्तैदछ कुपुत्रले कुलक
न नस्तै पालदछन् ॥ ८९ ॥

॥ स्यात्तु ॥

॥ चान ॥

॥ ४८ ॥

सकै सुवृक्षका फल को गंध ले सवै वन सुवास गछुन तलै स पूत रुकै ले कुल था
मू॥ २० ॥ जस्का पुत्र आक्राव शा माछुन चा कर स्त्री सन माहा को अभिषा

सके ना पि सुवृक्षे रा उष्यते न सुगंधिता ॥ वास्यते न वनं सर्व
सुपुत्रे रा कुलं यथा ॥ २० ॥ यस्य पुत्रावशा नित्या भार्या छंदा
नुगामिनी ॥ विभवे षपि संतुष्टा स्वर्गं तस्य मही मते ॥ २१ ॥

यजानि रहलग छुन धन भयापनि न भयापनि संतोष गछुन ॥
तलै स्वर्ग भंनु ॥ भूमि मा भयापनि ॥ २१ ॥

॥ रामः ॥

॥ ४८ ॥

जस्का छोरा वावा कावशा माछु तेही छोरा भंनु जस ले पालना गयो सोई वाबु हो ॥
विश्वास जस छे उ गरिंछु मित्र तलै कन भंनु स्त्री जस छे उ चित्त वस्यो उ सै लाई भं

ने पुत्राये पितुर्वक्ष्या सपितायस्तु पोषकाः ॥ तन्मित्रं यत्र विश्वासः
सा भार्या यत्र निवृत्तिः ॥ २२ ॥ यस्मिन् जीवति जीवंति विप्र मित्रा
शिवांधवाः ॥ सफलं जीवितं तस्य आत्मार्थं को न जीवति ॥ २३ ॥

नु ॥ २२ ॥ जस ले जिडं दा बाह्य रामित्र दा जुमाई जिडं छु सफल उ सै जिया
कोछु आक्रा जिडु मात्रै पालि कन त को जिडु दैन ॥ २३ ॥

॥ चान ॥

॥ ४६ ॥

जस्कागुराधर्मछ जिउनुउसैकनभंनु गुणाधर्मलेहीनभैजिउनुनिष्फल
६४ ॥ जस्कामुखमा सरस्वतीछ रूपवतीपतिवृतास्त्रीछ दानगर्नुसामर्थ

संजीवतिगुरायास्य यस्य धर्मसंजीवति ॥ गुणाधर्मविहीन
स्यनिष्फलंतस्यजीवितम् ॥ ६४ ॥ वाचासरस्वतीयस्यभार्या
रूपवतीसती ॥ लक्ष्मीन्यागवतीयस्य सफलंतस्यजीवितम् ॥ ६५ ॥

छ लक्ष्मीभैकनजिया सफलतसैलाईभंनु ॥ ६५ ॥

॥ रामः ॥

॥ ४६ ॥

जस्कामुखमा सरस्वतीछ रूपवतीपतिवृतास्त्रीछ दानगर्नुसामर्थछ लक्ष्मी
भैकनजिया सफलतसैलाईभंनु ॥ ६५ ॥ जस्मनुष्यको धर्मसर्थकाम

वाचासरस्वतीयस्यभार्यारूपवतीसती ॥ लक्ष्मीन्यागवतीयस्य
सफलंतस्यजीवितम् ॥ ६५ ॥ धर्मसर्थकाममोक्षाराण्यस्यको
पिनविद्यते ॥ भजागलेनस्येव निरर्थंतस्यजीवितम् ॥ ६६ ॥

मोक्षयोचारथोकमा एकैथोकपनिछैनत त्योमनुष्यवाकाकागलामाद
दजुंदियाजस्तोदुददिन्याभन्याहोईन तसर्थवर्थजिउनुहो ॥ ६६ ॥

॥ चान ॥

॥ ५० ॥

सत्यधर्महीन भौदिन व्यतीत ऊं छन् तस्कोजिया को स्वासमात्र आया को लो
हकार को खलासी जस्तो हो ॥ २७ ॥ शत्रु को पनि गुरा भन्नु गुरु को भनि दोष भ

सत्यधर्म विहीन स्यदिने यांति च विक्रिया ॥ सलोहकार भस्त्रे
वस्यं चैव प्रजीवति ॥ २७ ॥ शत्रो रपि गुरा वाच्या दोषा वा
च्या गुरो रपि ॥ युक्ति युक्तं वचो ग्राह्यं न वाच्यं गुरु गौर वात् ॥ २८ ॥

नृ गुरु लार्ह पनि भारी त्व न गर्जु सत्यवादी हुनु ॥ २८ ॥ २८ ॥

॥ शमः ॥

॥ ५० ॥

प्राण कंठ वाट जानु लाग्या पनि ॥ न गर्न्या काम न गर्नु गर्न्या काम अवश्य गर्नु तसर्थ
यथार्थ गर्नु ॥ २९ ॥ दुर्जन संग भयासज्जन पनि नाशिंछ जस्तो निर्मल जल हि

अकर्तव्यं न कर्तव्यं प्रारौः कंठ गतै रपि ॥ कर्तव्यमेव कर्तव्यं प्रारौः कंठ
गतै रपि ॥ २९ ॥ दुर्जनैः सह संगे न सुजनोपि विनश्यति ॥ प्रसन्नं ज
लमिमांज कर्दमैः कलुषीयते ॥ १०० ॥ इति श्री चान के सार संग्रहे द्विती २
यस्य तत्कं समाप्तं ॥ २ ॥

लासे धमिली ऊं छन् तस्तै संग दोष हो ॥ १०० ॥

इति श्री चान के सार संग्रहे भाषायां द्वितीय शतकं समाप्तम् ॥ १०१ ॥ ॥ ॥

॥ चान ॥

॥ ५१ ॥

॥ दिनसमयकाफललेशचंद्रं समयकाफललेमित्रं
॥ ज्ञानीजनलेसमयहरीकाजगर्भ ॥ १ ॥ समयलेष्टिस्थितिगराउछ

॥ गणेशायनमः ॥ ॥ कालेचरिपुरासंधिः कालेचमित्रसंग्र
हः ॥ कार्यकारणमाश्रित्य कालं क्षयति यदिति ॥ १ ॥ कालः पच
ति भूतानि कालः संहरते प्रजाः ॥ कालः सुप्ते उजागर्तिका लोहिदुर
तिक्रमः ॥ २ ॥

समयलेसंहारगर्हः सर्वेथोकगर्भसमयमाहो ॥ २ ॥ ॐ ॥ २ ॥

॥ गमः ॥

॥ ५१ ॥

कालमावीजधर्नु कालैलेवीजउपंछ कालैलेफलफलजंछ कालैलेष्टिगर्ह ॥
फेरीकालैलेसंहारगर्ह नसर्थ सर्वेचाहिकालबुलोह ॥ ३ ॥ आकाशदिसा भूमि

कालात्परोहतेवीजंफलं कालात्प्रवर्तते ॥ कालात्प्रवर्ततेष्टिः

उतः कालोपिसंहरेत् ॥ ३ ॥ रविदिशोभमिरायश्चंद्राकीनलमा

हतः ॥ सर्वसंहरतेकालस्तस्मात्कालोमहत्तरः ॥ ४ ॥ ॐ

पानिचंद्रः सूर्यः वायुः ॥ एतिसर्वेकाललेसंहारगर्ह नसर्थ कालवडोहो ॥ ४ ॥

॥ वान ॥
॥ ५२ ॥

सुन्यानभयाकाठाउमा वोल्पाको कालागु नागा ॥ रक्षाकागाउंमा धोविकोका
लागु ॥ ५ ॥ केराकावोटमा ॥ आगाको पराक्रम छैन विवेकनभयाकाठा

किं करिष्यति वक्ता च श्रोता यत्र न विद्यते ॥ नग्नक्षपरा कथा
मेरजकः किं करिष्यति ॥ ५ ॥ कदलीवनमध्यस्थो वह्निर्मे
दपराक्रमः ॥ अविवेकी जनस्थाने गुवान् किं करिष्यति ॥ ६

उंमा गुराजनको केही सी यू छैन ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ रामः ॥
॥ ५२ ॥

सति गर्नु सति न गर्नु भन्या कामर्यादा साधुजनसंग डुंछ प्रलयकालमा स
मुडले मर्यादानाधिजांछ साधुजनले प्रलयकालमा पनि मर्यादा छोड्दैन

प्रलये भिन्न मर्यादा भवति किल सागरा ॥ सागरा भेद मिच्छ
ति प्रलये पिन साधवः ॥ ७ ॥ मेरु श्वलति कल्यांते मर्यादा सा
गरस्य च ॥ प्रतिपन्न महासत्त्वान चलंति कदाचन ॥ ८ ॥

७ ॥ प्रलयकालमा सुमेरु पनि चल्छ स मुडले पनि मर्यादाना छिछ सा
धुजनले डुख सुखमा पनि क्रमार्ग चल्यैनन् ॥ ८ ॥ ९ ॥ ८ ॥

॥ वात ॥

॥ ५३ ॥

स्त्रीछेउंचंचलताऊंछे वाहराछेउंतपऊंछेनीचजनछेउंछुडाजीऊंछे साधुजन
छेउदयाधर्मऊंछे ॥ ९ ॥ साधुजनलाईसंगगदीदेहविकेरपनिआफ्राऊं

विद्यतेस्त्रीपुचापत्यंविद्यतेवांहरातपः ॥ पारुष्यंविद्यतेनी
चेदयासाधुविद्यते ॥ ९ ॥ साधुसन्मानमात्रेणभवतीदेह
विक्रयी ॥ उपकारशतेनापि दुर्जनः केन गृह्यते ॥ १० ॥

छे शयगुरालायाकोछतपनिआफ्राऊंछे शयगुरालायाकोछतपनिदुर्ज
नआफ्राऊंछे ॥ १० ॥

॥ शमः ॥

॥ ५३ ॥

सज्जनभन्याशास्त्रकाकुरागरीगुणिछे मूर्खलाईशास्त्रकाकुरालेबुझन्याछे
नप्रत्यक्षदीयवालिषनुरआषाऊन्यासवैदेष्टछे काशालोकेहिदेष्टे

बुधबोध्यानिशास्त्राणिनाबुधः शास्त्रकोबुधः ॥ प्रत्यक्षेपिक
तेदीयेचक्षुर्हिनोनपश्यति ॥ ११ ॥ नारीकेलफलाकारादृश्यंतेके
पिसज्जनाः ॥ अन्येपिवदराकाशवहिरैवमनोरमाः ॥ १२ ॥

नतस्तेहो ॥ ११ ॥ सज्जनभन्याकावाहिरवस्त्रोभिचमसिना नरिवलजस्ता ॥
दुर्जनभन्या बाहिरमसिना भिचरवर्मावयरजस्ता ॥ १२ ॥ ॥ ॥

॥ चान ॥

॥ ५४ ॥

शीतलभन्याको श्रीखंडरु चंद्रमा ऊर्ज श्रीखंडचंद्रमा भंडासा धजनको सं
गम शीतल हो ॥ १३ ॥ नीचजन धनको इच्छा गर्छ मध्यमजन धीति को इ

चंदनं शीतलं चंद्रं चंदनेन तु चंद्रमाः ॥ चंद्रचंदनयोर्मध्ये सा
धुसंपर्क शीतलं ॥ १३ ॥ अधमा धनमिच्छति धीतिमि
च्छति मध्यमाः ॥ उन्नता मानमिच्छति मानं हि महतां धनं ॥ १४ ॥

छागर्छन् साधजनलेमानको इच्छा गर्छन् मानभन्याको सा धजन
को धनद्वयकृन् ॥ १४ ॥

॥ एमः ॥

॥ ५४ ॥

हिं गाले घाउ रुचाउंछ राजाले धन रुचाउंछ नीचजनले कलह रुचाउंछ शा
धजन शांति रुचाउंछ ॥ १५ ॥ अधमजनले धनको इच्छा गर्छन् कन्याहरुले

मक्षिका वृणामिच्छति धनमिच्छति पार्थिवः ॥ नीचाः कलहमिच्छं
ति शांतिमिच्छति साधवः ॥ १५ ॥ इतरे चार्थमिच्छति रूपमिच्छं
ति दारिकाः ॥ ज्ञानयः कुलमिच्छति स्वर्गमिच्छति तापसाः ॥ १६ ॥

रूपको इच्छा गर्छन् ज्ञानिहरु गोचका कुल इच्छा गर्छन् तपस्वीहरु स्वर्गका इ
च्छा गर्छन् ॥ १६ ॥

४०

॥ वान ॥
॥ ५५ ॥

बडा कष्ट ले धन कमाउनु लोभ ले सुख गर्नु परलाई पीडा गर्नु सतिथी कस ज्ञान था
हावाउं देन ॥ १७ ॥ सज्जन ले नशक न्याकाज आरंभ गर्दै नन् लोभ देखाया पनि

अति क्लेश नय इव्यं अतिलोभेन यत्सुखं ॥ परपीडा च यावृत्ति
नेव साधु प्रविशते ॥ १७ ॥ अशकं नारभेत्प्राज्ञः अकार्यं नै
व कारयेत् ॥ स्वल्पकार्यं न कार्यं च निष्फलं नैव सेवयेत् ॥ १८ ॥

ऊकर्म गर्दै नन् नीच काम गर्दै नन् निष्फल कृत्या ठाडं मा सेवा गर्दै नन्

॥ रामः ॥
॥ ५५ ॥

आमको फल चढाया महादेव संतुष्ट ऊं छ वसुचक्राया चंद्रमा संतुष्ट ऊं छ ॥
मनमनै स्मरण गन्या विष्णु संतुष्ट ऊं छ वडा पुरुषलाई हात जोडी नमस्कार ग

अंभस्तु ध्यति अर्केण वसुशेषेण चंद्रमाः ॥ विष्णुः स्मरत्यमाचे
ण महान्तः करसंप्रदौ ॥ २३ ॥ लेखकः पाठक भवैव ये चान्ये शास्त्र
चिंतका ॥ सर्वे व्यसनि नो मूढा क्रियावंतश्च पंडिताः ॥ २४ ॥ १००

दी संतुष्ट ऊं छ ॥ २३ ॥ लेखन्या पद्व्या पंडित सतिले लेखन्या पद्व्या को अभ्या
समात्र गर्छ काम बुझ्दै न तिनहरूलाई व्यसनी भन्नु सर्वभन्नु जो काम काज गर्द

॥ २४ ॥
॥ ५५ ॥

॥ चान ॥

॥ ५७ ॥

हेरा मोटी घोडा को व्यापार राजा को सेवा तपस्या इचार काम जानी जन लेग न्या
हुन कातर जन लेखे तिग छन ॥ २५ ॥ धन इछाग न्या ले व्यापार ग छन ॥

वज्र मुक्ता भव शिज्यं राज सेवा तपो वनं ॥ धीरा भव चारि कुर्वन्ती
कातराः कृषि वाहका ॥ २५ ॥ वजे धनार्थी वारिज्यं विद्यार्थी च
वज्र श्रुतं ॥ मृतु काल मपत्पार्थी मानार्थी नृपतिं वजेत् ॥ २६ ॥

विद्या को इछाग न्या ले वज्र न शास्त्र पद छन ॥ उत्रार्थी ले मृतु काल मा भोग ग
छन ॥ मान इछाग न्या ले राजा को सेवा ग छन ॥ २६ ॥ ॥ ॥

॥ राम ॥

॥ ५७ ॥